कथा सरिता

वशीकरण मंत्र

एक शिष्य अपने गुरू के पास जाकर विनीत भाव से बोला - गुरूदेव! आप मुझे कोई ऐसा मंत्र दें ताकि देवता मेरे वश में हो जाएं।

गुरू ने कहा -जरूर दे दूंगा, पर पहले यह बताओ कि क्या तुम्हारे घर के नौकर-चाकर तुम्हारे वश में हैं? वह बोला -वे तो सब कामचोर हैं। काम न करने का बहाना ढूंढते रहते हैं। 'क्या परिवार वाले तुम्हारे वश में हैं' ? 'नहीं, सब स्वार्थी हैं।' 'तुम्हारी पत्नी तो तुम्हारे वश में है?' 'कहां है गुरूदेव! मैंने अपनी पत्नी से कहा एक हफ्ते बाद पीहर चली जाना। मगर मेरे मना करने पर भी कल अपनी मां से मिलने चली गई - शिष्य ने जवाब दिया।' फिर गुरू ने पूछा, चलो सबको जाने दो। मुझे यह बताओ कि तुम्हारा अपना मन तो तुम्हारे वश में होगा ही।

शिष्य ने कहा, नहीं गुरूदेव! मन वश में कहां है! यह तो बड़ा चंचल है। एक स्थान पर स्थिर होता ही नहीं है।

गुरू ने कहा -अरे भाई! जब परिवार, नौकर, पत्नी तेरे वश में नहीं, यहां तक कि तेरा मन भी तेरे वश में नहीं है तो देवता तुम्हारे वश में कैसे होंगे? सबसे पहले तुम अपने मन को वश में करो। मन जिसके वश में हो जाता है, देवता भी उसको नमन करते हैं।

राजा और फकीर

एक राजा एक फकीर का भक्त था। एक दिन फकीर से राजा ने कहा -बाबा, जो चीजें हमारे पास हैं, वे आपके पास भी हैं। फिर आपके और हमारी जिंदगी में क्या फर्क है? आप भोजन करते हैं, हम भी करते हैं। आप कपड़े पहनते हैं, हम भी पहनते हैं। हमारे पास धन-दौलत है, आपकी भी हर जरूरत दूसरों की दान-दक्षिणा और भिक्षा से पूरी हो ही जाती है। फकीर ने जवाब दिया- फिर भी हमारे और तुम्हारे बीच में गहरा फर्क है। वक्त आने पर बताऊंगा।

एक दिन राजा फकीर के साथ बैठा था। फकीर ने राजा का हाथ देखा और गमगीन हो गया। राजा ने इसका मतलब पूछा। फकीर ने कहा -कल सूरज उगने से पहले तुम्हारी मौत हो जाएगी। यह सुनते ही राजा घबरा गया। राजा ने कहा -ऐसा कैसे हो सकता है? फकीर ने कहा - तुम्हारे हाथ की रेखाएं यही बात बोल रही है। राजा उदास होकर महल में लौट आया। उसने अपने मंत्रियों, राजकुमारों और मंत्रियों को बुलाकर कहा -सभी माला लेकर राम का नाम जपो। मेरी मौत कल सुबह हो जायेगी। हो सकता है कि भगवान का नाम लेने से मेरी मौत टल जाए। पूरी रात महल में मातम छाया रहा। सभी भगवान का नाम जपते रहे। धीरे-धीरे रात कटी और सुबह हुई। राजा, उसका परिवार और सभी दरबारी खुशी से झूम उठे। राजा अपने परिवार के साथ फकीर के दर्शन करने पहुंचा। राजा ने कहा -बाबा, मेरी जिन्दगी बच गई। फकीर ने कहा -जिंदगी तो बचनी ही थी। राजा ने कहा -आपने तो सुबह तक मेरी मौत की भविष्यवाणी की थी। फकीर ने कहा -रात भर तुम्हारी आखों के सामने मौत ही नाच रही थी। पूरी रात तुम बैचेन रहे। तुम्हारे पास सब सुख-सुविधाएं थीं, पर तुम घबराते रहे। राजा ने कहा -सब ऐशोआराम तो थे, पर मुझे लग रहा था कि अब मरे कि तब। फकीर ने कहा -तुमने एक दिन मेरे और तुम्हारे बीच का फर्क पूछा था, याद है न। हमारे बीच यही फर्क है कि तुम मौत को भूलकर जीते हो और मैं मौत को याद रखकर जीता हूँ। 'संत वही होता है, जो अंत को सामने रखकर जीता है।' फकीर की बात सुनकर राजा समझ गया कि फकीर और आम आदमी के जीने के अंदाज में यही फर्क होता है।

सच्चा इंसान

एक गांव में एक संत के पास एक जिज्ञासु आया। उसने संत से कहा -गुरूदेव, मैं आपके पास ज्ञान पाने आया हूँ, मुझे ज्ञान-दान दें। संत ने कहा -मैं इंसानों को ही ज्ञान देता हूँ। पहले इंसान बनकर आओ। इंसान बनने के लिए कड़ी तपस्या करनी पड़ती है।

वह जिज्ञासु संत को प्रणाम करके जंगल में तपस्या करने लिए चला गया। छह महीने तपस्या के बाद वह संत के पास लौटा। संत ने अपनी कुटिया के बाहर एक महिला को खड़ा कर दिया और कहा -जैसे ही वह आदमी आए उस समय झाड़ू लगाते हुए आसपास की धूल उड़ा देना। महिला ने वैसा ही किया। अपने साफ-सुथरे कपड़ों पर धूल गिरने से उसे बहुत गुस्सा आया और महिला के साथ गाली-गलौच करने लगा। संत यह सब देख रहे थे। जिज्ञासु ने संत के पास जाकर कहा -गुरूदेव! मैंने गहन वन में भूख, प्यास, सर्दी, गर्मी पर विजय प्राप्त करने की कठिन साधना की, अब मुझे ज्ञान-दान दें। संत ने फिर कहा -नहीं अभी तुम पात्र बनकर आओ। संत की बात सुनकर जिज्ञासु दुबारा साधना करने जंगल में चला गया। छह महीने बाद जब वह संत के पास वापस आ रहा था तो महिला ने उसके साफ वस्त्रों से झाड़ू छुआ दिया। जिज्ञासु गुस्से में महिला को मारने दौड़ा। संत सारा नजारा देख रहे थे। उन्होने फिर उस जिज्ञासु से कहा कि ज्ञान प्राप्त करने के अधिकारी अभी तक तुम बने नहीं हो। अभी जाओ। जिज्ञासु फिर जंगल में तपस्या के लिए चल दिया। इस बार जब वह छह महीने बाद लौटा तो रास्ते में खड़ी महिला ने उस पर ढेर सारा कूड़ा-करकट डाल दिया। इस बार उस जिज्ञासु को बिल्कुल गुस्सा नहीं आया। जिज्ञासु उस महिला को प्रणाम करके बोला -बहन, तुमने यह बाहरी कूड़ा-करकट मेरे ऊपर डालकर मुझे समझा दिया कि भीतर घुसी बुराइयों का कूड़ा इससे भी ज्यादा गंदा है। संत यह सब देख रहे थे। वह जिज्ञासु संत के पास पहुंचा और बोला -गुरूजी, मुझे ज्ञान दीजिए। संत ने उसे गले लगाकर कहा कि -जिसने अपनी बुरी आदतों पर नियंत्रण कर लिया वही सच्चा ज्ञानी है। तुम्हें ज्ञान प्राप्त हो गया है, अब तुम सच्चे और अच्छे इंसान बन गये हो।

सुंदर गहना

एक राजा के सात राजकुमार थे। वे सातों राजकुमार एक संत का प्रवचन सुनने गए। वे उनकी वाणी से बहुत प्रभावित हुए और उन्हें वैराग्य आ गया। उन्होने तय किया कि वे भी सन्यास लेकर ज्ञान प्राप्त करेंगे। उन्होने संत से निवेदन किया -हम भी साधु बनना चाहते हैं। संत ने कहा -अगर तुम्हारे मन में सचमुच संसार से मोह छूट गया है तो मैं तुम्हें दीक्षा देने के लिए तैयार हूँ। राजकुमारों ने सोचा कि अगर माता-पिता के पास सन्यास की आज्ञा लेने जाएंगे तो शायद वे इसके लिए तैयार नहीं हों इसलिए अपने सेवक द्वारा यह सूचना भेजवा देंगे। उस सेवक ने राजकुमारों की बहुत सेवा की थी इसलिए उन्होने अपने वस्त्र-आभूषण सेवक को दे दिए। सेवक इतने सारे आभूषण पाकर बहुत खुश हुआ। राजकुमारों ने सेवक से कहा -तुम महाराज को सूचना देना कि आपके सातों पुत्र सन्यासी हो गए हैं और उन्होने आपसे क्षमा मांगी है कि बिना अनुमति लिए सन्यास लिया है। सेवक यह संदेश लेकर नगर की ओर चल दिया। चलते-चलते सेवक थक गया। वह रास्ते में एक पेड़ के नीचे आराम करने बैठ गया। तभी उसे विचार आया कि अगर मैं राजा को सातों राजकुमारों के सन्यास की खबर सुनाऊंगा, तो राजा शायद विश्वास न करे और मेरे पास उनके वस्त्र-आभूषणों को देखकर सोचने लगे कि कहीं मैंने ही गहनों की लालच में राजकुमारों की हत्या तो नहीं की। अचानक सेवक का हृदय परिवर्तित हुआ। वह अपने आपसे बोला - तू इन गहनों को देखकर खुश हो रहा है। पर राजकुमारों ने इन गहनों को त्याग दिया है, जरूर उन्हें इससे भी सुंदर गहना मिला होगा। सेवक ने सोचा कि मैं घर जाकर क्या करूंगा? मैं भी उस रास्ते पर जाऊंगा जिस पर सातों राजकुमार गये हैं। यह सोचकर वह वापस संत के पास पहुंचा। वहां सातों राजकुमार दीक्षा लेने की तैयारी कर रहे थे। सेवक बोला -हे राजकुमारों, आपके वैराग्य भाव को देखकर मेरा भी मन बदल गया है। मैं भी सन्यासी बनना चाहता हूँ। उसने संत से दीक्षा की बात कही। संत राजी हो गए। राजकुमारों ने कहा -हम चाहते हैं कि आप हमें सन्यास देने से पहले हमारे सेवक को सन्यास दें। संत ने कहा -तुमसे पहले इसे सन्यास देने का मतलब है तुम लोग इसे प्रणाम करोगे और यह तुम लोगों से बड़ा हो जाएगा। तुम सातों राजकुमारों को इसके सामने झुकना पड़ेगा। राजकुमारों ने कहा -हम यही तो चाहते हैं। हम राजकुमार होने के भान के कारण संत बनने के बाद भी अपने अहंकार को न मिटा पाएंगे। इसलिए आप इसे पहले सन्यास दें ताकि जिसने जीवन भर हमारी सेवा की है अब हम उसकी सेवा करके उसके ऋण से मुक्त हो सकें।

दिल्ली (मजलिस पार्क)। दिल्ली ग्राम विकास बोर्ड के अध्यक्ष एवं विधायक मंगतराम सिघल को शिवध्वज भेंट करते हुए ब्र.कु.राजकुमारी।

काठमाण्डु (नेपाल)। 'नि:स्वार्थ सेवा के लिए आध्यात्मिकता' विषयक कार्यक्रम का उद्घाटन करते हुए पशुपति विकास क्षेत्र के कोषाध्यक्ष नरोत्तम वैद्य, विश्व हिन्दु महासंघ के अध्यक्ष दामोदर गौतम, ब्र.कु.राज तथा अन्य।

सरदूलगढ़ (पंजाब)। तहसीलदार पुष्पेन्द्र कौर को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.बिन्दु, ब्र.कु.नीतू। साथ हैं ब्र.कु.ओमप्रकाश।

बहराईच (वाराणसी)। उत्तरप्रदेश विधानसभा के स्पीकर माताप्रसाद जी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.साधना तथा ब्र.कु.जया।

बोकारो (स्टील सिटी)। फैमिली कोर्ट के न्यायाधीश राजनारायण तिवारी को ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.कुसुम।

दिल्ली (करोल बाग)। 'लेडी रीडिंग हेल्थ स्कूल' की नर्सेस को तनाव प्रबंधन विषय पर सम्बोधित करने के पश्चात ब्र.कु.विजय।